Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 1

– Save This Page as a PDF–

इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा

मत्ती १६:१३-२०; मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१

खोदाई: कुछ लोगों ने ऐसा क्यों सोचा कि येशुआ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला था? एलिय्याह, या यिर्मयाह? पतरस के कबूलनामे में क्या महत्वपूर्ण था? बुनियादी यूनानी व्याकरण कैसे दिखाता है कि कलीसिया का निर्माण केफ़ा पर नहीं किया जा सकता है? अन्य बाइबिल और ऐतिहासिक प्रमाण क्या हैं कि पतरस पहले पोप नहीं थे? चट्टान कौन है? हेर्मोन पर्वत की तलहटी में पनियास नदी में खड़ा होना यह कैसे दर्शाता है कि मसीह किस बारे में बात कर रहे थे? शोल के द्वार का क्या अर्थ है? हम किस प्रकार पतरस को स्वर्ग के राज्य की कुंजियों का उपयोग करते हुए देखते हैं? प्रभु ने केफा को कौन सा विशेष अधिकार दिया? यीशु ने अपने प्रेरितों से क्यों कहा कि वे किसी को यह न बताएं कि वह मसीहा है?

चिंतन: यीशु आपके लिए बाइबल में सिर्फ एक नाम से अधिक कब बन गया? आप क्या कहते हैं कि मसीह कौन है? आपका जीवन किस प्रकार चट्टान पर बना है? क्या आपके आस-पास ऐसे लोग हैं जो इस बात को लेकर भ्रमित हैं कि येशुआ कौन है? आप उन्हें अपने जीवन की चट्टान कैसे दिखा सकते हैं? क्या आपके जीवन में पाप के कारण प्रभु में आपका स्थान खो सकता है?

यह फ़ाइल इज़राइल की आंशिक दृष्टि के पहले चरण के मुद्दे को चित्रित करेगी। लोगों की भीड़ मसीहा को कैसे देखती है और प्रेरित मसीहा को कैसे देखते हैं, इसके बीच स्पष्ट अंतर होगा।

जैसे ही यीशु ने इस्राएल के लिए अपने मंत्रालय का अंतिम चरण शुरू किया, वह और उसके प्रेरित कैसरिया फिलिप्पी (मती १६:१३ए) के आसपास के गांवों में लगभग तीस मील उत्तर की ओर चले गए। वहाँ, प्रभु हेरोदेस एंटिपास, फरीसियों और सदूकियों की झुंझलाहट से सुरक्षित थे। वहां वह छह महीने से कुछ अधिक समय पहले आने वाले क्रूसीकरण के लिए अपना शिष्यों तैयार कर सकता था। उन्होंने खुद को गलील सागर के आसपास के क्षेत्र से हटा लिया और लगभग तीस मील उत्तर में कैसरिया फिलिप्पी की ओर चले गए, जो पवित्र भूमि के सबसे ऊंचे पर्वत, माउंट हर्मन के तल पर है। इसकी सबसे ऊँची चोटी समुद्र तल से लगभग ९,००० फीट ऊँची है। चूँकि यह जॉर्डन नदी के उद्गम स्थल पर था, इस क्षेत्र की सुंदरता देखते ही बनती थी। इसके चारों ओर प्रभावशाली चट्टान के माध्यम से भूमिगत झरनों से प्रचुर मात्रा में ताज़ा पानी बहता था। गर्मियाँ करीब आ रही थीं और दो दिवसीय यात्रा हुलाह घाटी के पूर्व की ओर एक अच्छी

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 2

तरह से तय की गई रोमन सड़क का अनुसरण करती थी।

इसके चरम उत्तरी स्थान के कारण, बुतपरस्त अन्यजातियों ने कैसरिया फिलिप्पी के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवास किया, लेकिन येशुआ उनकी सेवा करने के लिए नहीं बल्कि अपने शिष्यों की सेवा करने के लिए वहां थे। यह मूर्तिपूजा का केन्द्र था। इज़राइली काल में, दान की जनजाति इस क्षेत्र में बस गई और अक्सर इसकी सीमा पर बुतपरस्त प्रभावों का शिकार हो गई। कैसरिया शहर उस पहाड़ी पर बनाया गया था जो नीचे एक नदी की छाया में थी। हेरोदेस के बेटे फिलिप ने इस क्षेत्र को एक आश्रय स्थल के रूप में विकसित किया और न केवल सीज़र का सम्मान करने के लिए, बल्कि इसे भूमध्यसागरीय तट पर कैसरिया से अलग करने के लिए इसका नाम कैसरिया फिलिपी रखा। बाद में रहने वालों ने उस स्थान का नाम बुतपरस्त देवता “पैन” के नाम पर रखा और पूजा के लिए कई वेदियाँ बनाईं। उनकी मूर्ति पैन में एक बकरी का पिछला भाग और सींग और एक आदमी का धड़ और चेहरा था। इसे पनियास या बांसुरी वादक पैन के स्थान के नाम से जाना जाने लगा।

सातवीं शताब्दी में क्षेत्र पर मुस्लिम विजय के कारण, पनियास बनिया बन गए क्योंकि उनकी वर्णमाला में कोई “पी” ध्वनि नहीं है। इसे आज भी बनिया कहा जाता है। हालाँकि, नई वाचा के समय में, पनियास नदी माउंट हर्मन के आधार पर एक गुफा से बहती थी। एक सदी पहले एक बड़े भूकंप के कारण नदी का रुख बदल गया था। इसलिए आज गुफा से कोई नदी नहीं बहती। लेकिन ईसा के समय पनियास नदी निकलकर उस गुफा से बाहर निकली और नदी के पत्थरों को तोड़ डाला। परिणामस्वरूप, वह जलधारा जहाँ यीशु और उसके प्रेरित खड़े थे, बस छोटे-छोटे पत्थरों या कंकडों से भर गई थी।

आखिरी फ़ाइल में, प्रभु ने अपने शिष्य को तीन प्रकार के ख़मीर के बारे में चेतावनी दी थी। यहां वह फरीसियों, सदूकियों और हेरोदियों के झूठ के प्रकाश में प्रेरितों का परीक्षण करता है (देखें Fw – फरीसियों और सदूकियों का खमीर)। येशुआ और बारह के बीच आगामी संवाद के लिए यह एक अजीब, फिर भी उपयुक्त सेटिंग थी।

एक बार जब यीशु अकेले में प्रार्थना कर रहे थे और उनके प्रेरित उनके पास आये। वे जाहिर तौर पर आपस में बात कर रहे थे। एक अच्छे रब्बी के रूप में, येशुआ ने एक प्रश्न पूछकर चर्चा शुरू की। उसने उनसे पूछा: लोगों की भीड़ क्या कहती है कि मनुष्य का पुत्र कौन है (मत्ती १६:१३बी; मरकुस ८:२७; लूका ९:१८)? यह प्रश्न किसी और अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न का अनुसरण करने के लिए रास्ता तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। प्रभु जानते थे कि लोग यह नहीं सोचते थे कि वह मसीहा हैं। वे एक अलग तरह के उद्धारकर्ता की उम्मीद कर रहे थे, जो उन्हें रोमन निर्भरता के बंधन से मुक्त कर देगा और उन्हें एक स्वतंत्र राष्ट्र बना देगा।

बारह लोगों ने, लोगों के बीच घुलते-मिलते, उसके बारे में व्यक्त की गई कई राय सुनी थी। प्रेरितों ने बहुत स्पष्टता से उत्तर दिया: कुछ लोग युहन्ना बपतिस्मा

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 3

देनेवाला कहते हैं। जब हेरोदेस एंटिपस ने प्रभु के अद्भुत कार्यों के बारे में सुना तो उसका यह तत्काल निष्कर्ष था। और उनकी राय दूसरों पर भी झलकती थी। फिर भी अन्य, मसीह के पाप की तीव्र निंदा और पश्चाताप के आह्वान से प्रभावित होकर, उन्होंने सोचा कि वह एलिय्याह था, जो अग्नि के रथ में स्वर्ग गया था (द्वितीय राजा २:११), और लोकप्रिय परंपरा में, अग्रदूत के रूप में वापस आएगा मसीहा का। और फिर भी अन्य लोगों ने रोते हुए भविष्यवक्ता यिर्मयाह के दुखद उपदेश का पता लगाया। एक बड़ा समूह उसे किसी एक भविष्यवक्ता के साथ पहचान नहीं सका और उसके बारे में बोलने से संतुष्ट था क्योंकि बहुत पहले के भविष्यवक्ताओं में से एक जीवन में वापस आ गया है (मत्तीयाहु १६:१४; मरकुस ८:२८; लूका ९:१९)।

पारंपरिक यहूदी धर्म ने कभी भी पुनर्जन्म की शिक्षा नहीं दी है; हालाँकि, एक विश्वास है (यहां तक कि तानाख में भी) कि विशेष व्यक्तियों का पुनरुत्थान प्रकट हो सकता है (उदाहरण के लिए मलाकी ४:५-६ में एलिय्याह का फिर से प्रकट होना)। अगर सच कहा जाए, तो आम परंपरा हमें याद दिलाती है कि एलियाहू राजा मसीहा के आगमन की घोषणा करने के लिए फिर से आएगा (प्रकाशितबाक्य पर मेरी टिप्पणी देखें बीडब्ल्यू
– मैं प्रभु के आने से पहले आपको भाबिसत्बकता एलिय्याह भेजूंगा), जैसा कि कप में देखा गया है एलिय्याह हर वसंत में फसह सेडर पर। यह भी हो सकता है कि लोग येशुआ को पिछले पैगम्बरों की तरह ही भावना और शक्ति से सेवा करने वाले व्यक्ति के रूप में देख रहे हों।

लोगों को ऐसा कोई समकालीन महान व्यक्ति नहीं मिला जिसके साथ यीशु की तुलना की जा सके, सिवाय युहन्ना के, जिसका हाल ही में सिर काटा गया था। लेकिन अपने अंधेपन के कारण, वे उसे अपेक्षित व्यक्ति के रूप में सोचने में सक्षम नहीं थे, खासकर जब से महान महासभा ने पहले ही उसके मसीहा संबंधी दावों को खारिज कर दिया था। तो येशुआ ने चर्चा को घर के करीब लाने के लिए एक अनुवर्ती प्रश्न पूछा: लेकिन आपके बारे में क्या? उसने पूछा। आप क्या कहते हैं मैं कौन हूँ (मती १६:१५; मरकुस ८:२९; लूका ९:२०)? ग्रीक और भी अधिक सशक्त है, इसका शाब्दिक अर्थ है: लेकिन आप, आप क्या कहते हैं कि मैं कौन हूं? उनके उत्तर पर बहुत कुछ निर्भर था।

इस बात पर कुछ भ्रम हो सकता है कि यीशु आज कौन हैं, लेकिन उनके सबसे करीबी शिष्यों के बीच कोई भ्रम नहीं था जो तीन साल तक उनके साथ रहे थे। शमौन पतरस ने उत्तर देते हुए कहा: तू मसीहा है, जीवित परमेश्वर का पुत्र है (मत्तीयाहु १६:१६; मरकुस ८:३०बी; लूका ९:२१)। एक बार फिर, ग्रीक और भी अधिक सशक्त है, जिसमें लिखा है: आप मसीहा हैं, ईश्वर के पुत्र हैं, जीवित हैं। जैसा कि इस घोषणा से पता चलता है, यह काफी आश्चर्यजनक है! नाज़रेथ के येशुआ ने इस्राएल में कई चमत्कार किए, फिर भी वह एक भविष्यवक्ता से भी बढ़कर है। उसने लोगों को कई सुंदर सच्चाइयाँ सिखाईं, फिर भी वह एक महान रब्बी से भी बढ़कर है। शमौन ने पुष्टि की कि वह येशुआ को लंबे समय से वादा किया गया मेशियाक मानता था। बिना किसी संदेह के इस स्वीकारोक्ति ने केफ़ा के विश्वास के चरम बिंदु को भी चिह्नित किया। उसके बाद, मसीह के

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 4

पुनरुत्थान तक, यह कभी भी इतनी ऊँचाइयों तक नहीं पहुँचा।

अब पतरस निश्चित रूप से अपनी घोषणा के पूरे निहितार्थ को नहीं समझ पाया। हालाँकि, यह लोगों से एक स्पष्ट विराम था। उस समय यीशु ने स्पष्टीकरण देना आरम्भ किया। यह ऐसा था मानो वह कह रहा हो, “अब जब तुम्हें यह समझ आ गई है, तो मैं तुम्हें मसीहा की भूमिका बताने जा रहा हूँ।” और अगले ही भाग में, यीशु अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करते हैं और मसीहा की कष्टकारी भूमिका को परिभाषित करना शुरू करते हैं।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि यदि पतरस की घोषणा गलत होती, तो येशुआ ने निश्चित रूप से उसे सुधार दिया होता। परन्तु शमौन को सुधारा नहीं गया – वह धन्य था। यीशु ने उत्तर दिया: हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि यह बात मांस और लहू के द्वारा नहीं, परन्तु मेरे स्वर्गीय पिता ने तुझ पर प्रगट की है (मती १६:१७)। पतरस की स्वीकारोक्ति मानवीय तर्क से नहीं, बल्कि दिव्य रोशनी से थी। शमौन ने अभी जो सत्य कबूल किया था वह वह नींव थी जिस पर ईसा मसीह अपना कलीसिया बनाएंगे। उनका मतलब था कि पतरस ने अपने व्यक्तित्व से संबंधित बुनियादी आवश्यक सत्य को देखा था, वह आवश्यक सत्य जिस पर कलीसिया की स्थापना की जाएगी, और कुछ भी उस सत्य को उखाड़ फेंकने में सक्षम नहीं होगा, यहां तक कि बुरी ताकतें भी नहीं जो इसके खिलाफ लड़ सकती हैं। पतरस बारह प्रेरितों में से पहला था जिसने प्रभु को मसीहा के रूप में देखा। यीशु ने उस आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के लिए उसकी सराहना की, और कहा कि उसका कलीसिया उस तथ्य पर आधारित होगा। और निस्संदेह, यह पतरस पर कलीसिया की स्थापना से कहीं अलग बात थी।

पतरस के नाम का उपयोग करते हुए और शब्दों का प्रयोग करते हुए, यीशु ने उससे कहा: और मैं तुमसे कहता हूं कि तुम पतरस हो (मत्तीयाहु १६:१८ए)। कोई केवल कल्पना कर सकता है कि प्रभु कैसरिया फिलिप्पी में विशाल चट्टान के नीचे खड़े हैं और कई छोटे कंकड़ में से एक को उठाने के लिए नीचे झुक रहे हैं। यह एक ग्राफिक वस्तु पाठ रहा होगा क्योंकि उसने पतरस के प्रतीक के रूप में एक छोटा पत्थर उठाया था और फिर मसीह के मसीहा होने की अपनी स्वीकारोक्ति के प्रतीक के रूप में विशाल चट्टान की ओर इशारा किया था।

कैथोलिक कलीसिया की यह व्याख्या, कि कलीसिया की स्थापना पतरस पर हुई थी और वह पहला पोप था, बुनियादी ग्रीक व्याकरण का उल्लंघन करता है। पतरस या पेट्रोस एक पुल्लिंग संज्ञा है और इसका अर्थ है छोटा पत्थर या कंकड़। यीशु कह रहे थे, “पतरस, तुम एक छोटे पत्थर या कंकड़ हो, ठीक पनियास नदी के इन पत्थरों की तरह।”

और इस चट्टान पर मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा (मती १६:१८बी)। रॉक या पेट्रा शब्द एक स्त्रीवाची संज्ञा है और इसका अर्थ एक विशाल अचल चट्टान, चट्टान या कगार है, ठीक उसी तरह जैसे कैसरिया फिलिप्पी में यीशु ने कहा था। ग्रीक व्याकरण के बुनियादी

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 5

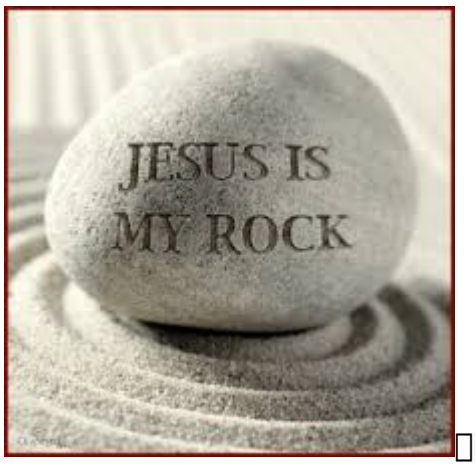
नियम बताते हैं कि पुल्लिंग पुल्लिंग को संशोधित करता है, स्त्रीलिंग स्त्रीलिंग को संशोधित करता है, और नपुंसकलिंग नपुंसक को संशोधित करता है। आपके पास स्त्रीलिंग संज्ञा को संशोधित करने वाली पुल्लिंग संज्ञा नहीं हो सकती या इसके विपरीत; इस प्रकार, यह व्याकरणिक रूप से संभव नहीं हो सकता कि कलीसिया पतरस पर बनाया जा रहा था। येशुआ ने दो पूर्ण, अलग-अलग बयान दिए। उन्होंने कहा: आप पतरस या पेट्रोस (पुरुषवाचक संज्ञा) हैं और इस चट्टान (लिंग परिवर्तन, विषय परिवर्तन का संकेत) पर मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा। यदि ईसा मसीह का यह कहने का इरादा था कि कलीसिया की स्थापना पतरस पर की जाएगी, तो उनके लिए वाक्य के बीच में शब्द के स्त्रीलिंग रूप को स्थानांतरित करना हास्यास्पद होता, यह कहते हुए, यदि हम शाब्दिक और कुछ हद तक काल्पनिक रूप से अनुवाद कर सकते हैं, “और मैं आपको बताता हूं कि आप मिस्टर रॉक हैं, और इस पर, मिसेज रॉक, मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा”।

यीशु वास्तव में जो कह रहे थे वह यह था: आप पेट्रोस हैं, एक चट्टान जैसा आदमी, और इस पेट्रा पर, इस विशाल जिब्राल्टर जैसी चट्टान, मेरे देवता, मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा।

नहीं, बिना किसी संदेह के, बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि कलीसिया पतरस पर नहीं बनाया गया है, बल्कि यह प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर बनाया गया है, जिसके मुख्य आधारशिला स्वयं मसीह यीशु हैं (इफिसियों २:२०)। और फिर, क्योंकि जो नींव पहले से पड़ी है, जो यीशु मसीह है, उसके अलावा कोई और कोई नींव नहीं डाल सकता (प्रथम कुरिन्थियों ३:११)। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि शुरुआती कलीसिया के कुछ पिता, ऑगस्टाइन और जेरोम, समझते थे कि चट्टान पतरस नहीं, बल्कि यीशु मसीह है। निस्संदेह, अन्य लोगों ने पोप संबंधी व्याख्या दी। लेकिन इससे पता चलता है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि “पिताओं की सर्वसम्मत सहमति” नहीं थी।

यह पहली बार है कि बाइबिल में कलीसिया शब्द का प्रयोग किया गया है और यह भविष्य काल में है। वाचा धर्मशास्त्र, या प्रतिस्थापन धर्मशास्त्र, सिखाता है कि कलीसिया एडम के समय से अस्तित्व में था और इसलिए कलीसिया हमेशा “सच्चा इज़राइल” रहा है। लेकिन यहां, येशुआ इंगित करता है कि कलीसिया भविष्य है, यह तब तक शुरू नहीं होगा जब तक कि शवु’ओट का त्योहार नहीं होगा जब वहां इकट्ठे हुए सभी यहूदी रुआच हाकोडेश से भर जाएंगे (प्रेरितों २:१-४७)। प्रतिस्थापन धर्मशास्त्र सिखाता है कि इज़राइल से किए गए सभी वादे उसके पाप के कारण रद्द कर दिए गए हैं। इसमें सावधानी यह होगी कि यदि इस्राएल अपने पाप के कारण अपना उद्धार खो सकता है, तो हम भी अपने पाप के कारण अपना उद्धार खो सकते हैं! हालाँकि, परमेश्वर का वचन दृढ़ता से सिखाता है कि विश्वासी मसीह में सुरक्षित है (देखें Ms– विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा)। रब्बी शाऊल लिखते हैं: क्योंकि मुझे विश्वास है कि न मृत्यु, न जीवन, न देवदूत, न राक्षस, न वर्तमान, न भविष्य, न कोई शक्ति, न ऊँचाई, न गहराई, न ही सारी सृष्टि में कुछ भी (जिसमें हम भी शामिल हैं), नहीं होगा। हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सके (रोमियों ८:३८-३९)।

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 6



जब भी चट्टान शब्द का प्रयोग तनाख में किया जाता है, तो
यह मसीहा की तस्वीर है (उत्पत्ति ४९:२४; निर्गमन १७:६; संख्या २०:८; व्यवस्थाविवरण ३२:४ और १३; दूसरा शमूएल २२:२; भजन १८:२) , १९:१४, ४०:२, ६१:२ और ९२:१५; यशायाह २६:४ और ५१:१)। तब, कलीसिया का निर्माण पतरस पर नहीं, बल्कि मसीहा पर किया जा रहा था। अधिक विशेष रूप से, पतरस ने अभी मसीहा के बारे में क्या कहा था (पतरस का मसीह के बारे में स्वीकारोक्ति)। तुम पतरस हो, और मैं इस चट्टान पर अपना कलीसिया बनाऊंगा (मत्तीयाहु १६:१८ केजेवी)। तो फिर, किस आधार पर रोमन कलीसिया पतरस फॉरवर्ड से पोप के उत्तराधिकार के अपने सिद्धांत को स्थापित करता है? शुरुआत करने के लिए, वे मूल भाषा – ग्रीक पाठ – को अनदेखा करके अपनी व्याख्या के लिए किसी भी जवाबदेही की उपेक्षा करते हैं।

इस वचन की व्याख्या करने के लिए ये कैथोलिक बाइबिल से लिए गए नोट्स हैं: अरामी शब्द केपा, जिसका अर्थ है चट्टान और ग्रीक में केफसिस के रूप में अनुवादित, वह नाम है जिसके द्वारा पॉलिन अक्षरों में पतरस को बुलाया जाता है (प्रथम कुरिन्थियों १:१२; ३:२२, ९:५, १५:५; गलातियों १:१८; २:९, ११ और १४, गलातियों २:७-८ को छोड़कर जहाँ उसे पतरस कहा गया है)। इसका अनुवाद युहन्ना १:४२ में पेट्रोस या पतरस के रूप में किया गया है। यीशु के कथन का अनुमानित मूल अरामी अंग्रेजी में होगा, “आप चट्टान (केफा) हैं और इस चट्टान (केफा) पर, मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा।” ग्रीक पाठ का अर्थ शायद यही है, क्योंकि पुल्लिंग संज्ञा पेट्रोस (पतरस का नया नाम) और स्त्रीलिंग संज्ञा पेट्रा (रॉक) के बीच लिंग में अंतर केवल स्त्रीलिंग संज्ञा को उचित नाम के रूप में उपयोग करने की अनुपयुक्तता के कारण हो सकता है। पुरुष। जबकि दोनों शब्दों का प्रयोग आम तौर पर थोड़ी भिन्न बारीकियों के साथ किया जाता था, उन्हें एक ही अर्थ “रॉक” के साथ भी परस्पर उपयोग किया जाता था।

आप उम्मीद करेंगे कि रोमन कलीसिया के लिए यह सिद्धांत जितना महत्वपूर्ण है, वे मूल भाषा का अर्थ मानने से थोड़ा अधिक करेंगे। और यह कहना कि ग्रीक पाठ का शायद यह मतलब है कि शब्द वही हैं, सबसे अच्छी स्थिति में खराब विद्वता है, और सबसे खराब स्थिति में समझ से परे गैर-जिम्मेदाराना है। मुझे ऐसा लगता है कि वे पाठ (व्याख्या) से अर्थ निकालने की कोशिश नहीं कर रहे थे, बल्कि पाठ में अपना अर्थ

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 7

पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। कैथोलिक कलीसिया ग्रीक अनुवाद के बजाय लैटिन वुल्गेट अनुवाद का उपयोग करता है क्योंकि ग्रीक अनुवाद पतरस (पेट्रोस) और रॉक (पेट्रा) के बीच अंतर करता है, वल्गेट नहीं करता है। लैटिन वल्गेट अनुवाद में वे एक ही शब्द हैं, इसलिए रोमन कलीसिया झूठा कहता है कि पतरस वह चट्टान है जिस पर कलीसिया बनाया गया था। इस महत्वपूर्ण विषय को छोड़ने से पहले पाँच अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

पहला, पतरस ने अपने लेखन में कभी भी पोप होने का दावा नहीं किया (प्रथम पतरस १:१, ५:१-३)। यह समझ से परे लगता है कि यदि वह पोप होता, “पृथ्वी पर ईसा मसीह का स्थान लेने वाला कलीसिया का सर्वोच्च मुखिया,” तो उसने अपने पत्रों में इस तथ्य की घोषणा की होती। इसके विपरीत, पतरस खुद को यीशु मसीह के एक प्रेरित के रूप में संदर्भित करता है (जिनमें से ग्यारह अन्य थे, और बाद में रब्बी शाऊल को येशुआ द्वारा अन्यजातियों के लिए एक प्रेरित के रूप में नियुक्त किया गया था), और एक साथी बुजुर्ग, यानी बस के रूप में मसीह का एक मंत्री.

दूसरे, पतरस के प्रति पॉल के रवैये पर ध्यान देना बहुत दिलचस्प है। कलीसिया शुरू होने के बाद, बाद में पॉल को प्रेरित बनने के लिए बुलाया गया। फिर भी केफा का उस चुनाव से कोई लेना-देना नहीं था, क्योंकि यदि वह पोप होता तो अवश्य होता। पॉल आसानी से प्रेरितों में सबसे महान था, उसने पतरस की तुलना में नई वाचा के बारे में अधिक लिखा था। और एक अवसर पर पौलुस ने सार्वजनिक रूप से पतरस को डांटा (गलातियों २:११-१४ और १६)। दूसरे शब्दों में, पॉल ने “पवित्र पिता” पर सुसमाचार की सच्चाई पर नहीं चलने का आरोप लगाते हुए, उन सभी के सामने “अपमानित” किया। निश्चित रूप से पोप से बात करने का यह कोई तरीका नहीं था! आज किसी भी व्यक्ति की कल्पना करें, यहाँ तक कि एक कार्डिनल भी, जो ऐसी भाषा में पोप को डांटने और निर्देश देने का दायित्व ले रहा हो! पौलुस ने क्या सोचा था कि वह कौन है जो अधर्मी आचरण के लिए मसीह के पादरी को डांट सकता है? यदि केफ़ा पोप होता तो यह पॉल का कर्तव्य होता और अन्य प्रेरितों का भी कर्तव्य होता कि वे उसे उसी रूप में पहचानें और केवल वही सिखाएँ जो वह स्वीकृत करता है। जाहिर है, पॉल ने पतरस को विश्वास और नैतिकता में अचूक नहीं माना, या किसी भी तरह से उसकी सर्वोच्चता को मान्यता नहीं दी।

तीसरा, अन्य प्रेरित भी इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ लगते हैं कि पतरस कलीसिया का प्रमुख था। वे कहीं भी उसके अधिकार को स्वीकार नहीं करते। और कहीं भी वह उन पर अधिकार जताने का प्रयास नहीं करता। प्रेरितों १५ में यरूशलेम में परिषद ने स्पष्ट रूप से खुलासा किया कि उन दिनों कलीसिया कैसे संचालित होता था। यदि वर्तमान पोप पदानुक्रम मौजूद होता, तो पहले स्थान पर परिषद की कोई आवश्यकता नहीं होती। अन्ताकिया के कलीसिया ने रोम के बिशप केफ़ा को एक पत्र लिखा होगा, और उन्होंने मामले को निपटाने के लिए एक पोप बैल जारी किया होगा। और सभी चर्चों में से अन्ताकिया का कलीसिया आखिरी था जिसे त्ज़ियॉन से अपील करनी चाहिए थी। रोमन

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 8

कैथोलिक किंवदंती के अनुसार पतरस रोम में अपना अधिकार स्थानांतरित करने से पहले सात साल तक एंटिओक में बिशप थे। लेकिन अपील यरूशलेम में एक कलीसिया परिषद में की गई थी, पतरस से नहीं। और याकूब ने अध्यक्षता की और निर्णय की घोषणा की, पतरस ने नहीं। वास्तव में, केफ़ा ने कोई राय व्यक्त करने के बारे में भी कुछ नहीं कहा। उन्होंने कोई अचूक घोषणा करने का प्रयास नहीं किया, हालाँकि चर्चा का विषय आस्था का एक महत्वपूर्ण विषय था। इसके अलावा, येरुशलायिम में परिषद के बाद, केफ़ा का प्रेरितों की पुस्तक में फिर कभी उल्लेख नहीं किया गया है! पोप के लिए कार्य करने का यह एक बहुत ही अजीब तरीका होगा।

चौथा, रोमन कैथोलिक परंपरा के अनुसार, पतरस रोम के पहले बिशप थे। माना जाता है कि उनका पोप पद ६७ ईस्वी में रोम में शहीद होने तक पच्चीस वर्षों तक चला। हालाँकि, रोम में पोप के रूप में पतरस के कथित शासन के बारे में उल्लेखनीय बात यह है कि नई वाचा इसके बारे में एक भी शब्द नहीं कहती है। रोम शब्द बाइबिल में केवल नौ बार आता है, और इसके संबंध में कभी भी केफ़ा का उल्लेख नहीं किया गया है। पतरस के किसी भी पत्र में रोम का कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन पॉल की रोम यात्रा को प्रेरितों २७ और २८ में बहुत विस्तार से दर्ज किया गया है। वास्तव में, नई वाचा में कोई सबूत नहीं है, न ही किसी भी प्रकार का कोई ऐतिहासिक प्रमाण है कि पतरस कभी रोम में था।

अंत में, यह मानने का सबसे ठोस कारण कि पतरस कभी रोम में नहीं था, रोमनों को लिखे पॉल के पत्र में पाया जाता है। रोमन कैथोलिक परंपरा के अनुसार, केफा ने ४२ से ६७ ईस्वी तक रोम में पोप के रूप में शासन किया। यह आम तौर पर सहमत है कि रोम में कलीसिया को पॉल का पत्र वर्ष ५८ ईस्वी में लिखा गया था, जब पतरस का कथित शासन था। उन्होंने अपने पत्र को पतरस को संबोधित नहीं किया, जैसा कि उन्हें पोप होने पर होना चाहिए था, बल्कि रोम में विश्वासियों को संबोधित किया था। एक मिशनरी के लिए एक कलीसिया को लिखना और उसके पादरी का उल्लेख न करना कितना अजीब है! वह अक्षम्य अपमान होता. आज हम उस मिशनरी के बारे में क्या सोचेंगे जो दूर के शहर में एक मण्डली लिखने की हिम्मत करेगा और अपने पादरी का उल्लेख किए बिना, उन्हें बताएगा कि वह वहां जाने के लिए उत्सुक था ताकि वह उनके बीच कुछ फल ला सके, जैसा कि उसने अपने में देखा था अपने समुदाय (रोमियों १:१३), कि वह उन्हें निर्देश देने और उन्हें मजबूत करने के लिए उत्सुक था, और वह वहां सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उत्सुक था जहां पहले इसका प्रचार नहीं किया गया था? पादरी को कैसा महसूस होगा यदि उसे पता चले कि ऐसी शुभकामनाएँ उसके २७ सबसे प्रमुख सदस्यों को भेजी गई थीं, लेकिन उसे नहीं? क्या वह ऐसे अनैतिक कार्यों के लिए खड़े होंगे? और तो और पोप! यदि पतरस १६ वर्षों से रोम की कलीसिया में सेवा कर रहा था, तो पौलुस ने कलीसिया के लोगों को इन शब्दों में क्यों लिखा: मैं तुम से मिलने की लालसा रखता हूं ताकि मैं तुम्हें कुछ आत्मिक उपहार दे सकूं जो तुम्हें बलवन्त बनाए। (रोमियों १:११)। क्या यह केफा का अपमान नहीं होगा? क्या पॉल के लिए पोप के सिर के ऊपर से जाना अभिमान नहीं होगा? और यदि पतरस वहां १६ वर्षों से था, तो पॉल के लिए वहां जाना

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 9

क्यों जरूरी था, खासकर जब से उसने अपने पत्र में कहा है कि वह किसी और की नींव पर निर्माण नहीं करता है: यह हमेशा से मेरी महत्वाकांक्षा रही है कि जहां ईसा मसीह सुसमाचार का प्रचार करें यह ज्ञात नहीं था, कि मैं किसी और की नींव पर निर्माण न कर रहा होता (रोमियों १५:२०)। रोमन कलीसिया को लिखे अपने पत्र के समापन पर, पॉल ने ऊपर उल्लिखित २७ लोगों को शुभकामनाएँ भेजीं, जिनमें कुछ महिलाएँ भी शामिल थीं। लेकिन उन्होंने केफ़ा का ज़िक्र ही नहीं किया।

और फिर, यदि पतरस पहले रोम में पोप था, या उस समय जब पॉल ६१ ईस्वी में एक कैदी के रूप में वहां पहुंचा था, तो पॉल उसका उल्लेख करने में विफल नहीं हो सकता था, क्योंकि उसके कारावास के दौरान रोम में लिखे गए पत्रों में – इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन – उसने रोम में अपने साथी-कार्यकर्ताओं की काफी सूची दी है और पतरस का नाम उनमें से नहीं है। उसने वहाँ पूरे दो साल एक कैदी के रूप में बिताए और जो भी उससे मिलने आता था उसका स्वागत करता था (प्रेरितों २८:३०)। न ही उसने तीमुथियुस को लिखे अपने दूसरे पत्र में पतरस का उल्लेख किया है, जो रोम में उसके दूसरे कारावास के दौरान, ६७ ईस्वी में लिखा गया था, जिस वर्ष पतरस पर रोम में शहादत का सामना करने का आरोप लगाया गया था, और अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले (दूसरा तीमुथियुस ४:६-८). वह कहता है कि उसके सभी दोस्तों ने उसे छोड़ दिया था, और केवल लूका ही उसके साथ था (दूसरा तीमुथियुस ४:१०-११)। पतरस कहाँ था? यदि वह रोम में पोप था जब पॉल कैदी था, तो पतरस ने पॉल को क्यों नहीं बुलाया और सहायता की पेशकश क्यों नहीं की? वह किस प्रकार का आध्यात्मिक नेता होगा?

यह सब यह स्पष्ट करता है कि पतरस कभी भी रोम में नहीं था, भले ही वेटिकन ने सार्वजनिक रूप से मुट्ठी भर हड्डियों के टुकड़ों का अनावरण किया है जो कथित तौर पर उससे संबंधित हैं। प्रारंभिक कलीसिया फादरों में से कोई भी इस विश्वास का समर्थन नहीं करता है कि पतरस पाँचवीं शताब्दी में जेरोम तक रोम में बिशप था। डु पिन, एक रोमन कैथोलिक इतिहासकार, स्वीकार करते हैं कि “पतरस की प्रधानता प्रारंभिक कलीसिया लेखकों, जस्टिन शहीद (१३९ ईस्वी), आइरेनियस (१७८ ईस्वी), अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट (१९० ईस्वी), या सबसे प्राचीन लेखकों द्वारा दर्ज नहीं की गई है। पिता की।” कैथोलिक धर्म अपनी नींव न तो बाइबिल की शिक्षा पर, न ही इतिहास के तथ्यों पर, बल्कि मौखिक कानून की तरह, केवल पुरुषों की निराधार परंपराओं पर बनाता है (मरकुस ७:८)।

और शोल के फाटक उस पर विजय न पा सकेंगे (मत्तीयाहु १६:१८सी)। शोल के द्वार शारीरिक मृत्यु के लिए तानाख का एक मुहावरा है (भजन ९:१३, १०७:१८; अय्यूब ३८:१७; यशायाह ३८:१०; योना २:६बी)। न तो पतरस की मृत्यु, न ही प्रेरितों की मृत्यु, या यहाँ तक कि मसीह की मृत्यु, कलीसिया को बनने से रोक सकती थी। इसका तात्पर्य यीशु की शिक्षा में आंशिक अंधापन था। वह अगली फ़ाइल में उस आंशिक अंधेपन को संबोधित करना शुरू करेगा।

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 10

मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा (मत्ती १६:१९ए)। बाइबिल में जब भी कुंजी या कुंजी शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है, तो यह हमेशा दरवाजे खोलने या बंद करने के अधिकार का प्रतीक होता है (न्यायाधीशों ३:२५; प्रथम इतिहास ९:२७; यशायाह २२:२०-२४; मैट १६:१९ए; प्रकाशितवाक्य १:१८, ३:७, ९:१ और २०:१)। पतरस कलीसिया के दरवाजे खोलने के लिए जिम्मेदार होंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में उनकी एक विशेष भूमिका होगी। टोरा की व्यवस्था में, मानवता दो समूहों, यहूदियों और अन्यजातियों में विभाजित थी। लेकिन अनुग्रह के युग में, अंतरविधान काल में जो कुछ हुआ, उसके कारण लोगों के तीन समूह थे, यहूदी, अन्यजाति और सामरी (मत्ती १०:५-६)। पतरस पवित्र आत्मा प्राप्त करके यहूदियों (प्रेरितों २), सामरी (प्रेरितों ८), और अन्यजातियों (प्रेरितों १०) को कलीसिया में लाने में मुख्य व्यक्ति (अधिनियमित उद्देश्य) होगा। एक बार जब उसने दरवाज़ा खोला तो वह खुला ही रहा।

जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुलेगा (मत्तीयाहु १६:१९बी)। यहाँ पूर्ण काल का उपयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि जो कुछ भी स्वर्ग में पहले से ही परमेश्वर का निर्णय है वह पृथ्वी पर प्रेरितों के सामने प्रकट होगा। इसका शाब्दिक अर्थ है: जो कुछ भी आप पृथ्वी पर निषिद्ध करते हैं वह स्वर्ग में पहले ही निषिद्ध हो चुका होगा। उस समय के रब्बी लेखन में बाइंडिंग और लूज़िंग शब्द आम थे। यहूदी सन्दर्भ के अनुसार, रब्बियों द्वारा बाइंडिंग और लूज़िंग शब्दों का उपयोग दो तरीकों से किया जाता था: न्यायिक और विधायी। न्यायिक रूप से, बाँधने का अर्थ सज़ा देना है, और ढीला करने का मतलब सज़ा से मुक्त करना है। विधायी रूप से, बाँधने का अर्थ किसी चीज़ को रोकना है, और ढीला करने का अर्थ उसे अनुमति देना है। वास्तव में, फरीसियों ने स्वयं के लिए बंधन और मुक्ति का दावा किया था, लेकिन परमेश्वर ने वास्तव में उन्हें यह कभी नहीं दिया। उस समय यीशु ने यह विशेष अधिकार केवल पतरस को दिया। अपने पुनरुत्थान के बाद मसीह ने अन्य प्रेरितों को विधायी मामलों में और न्यायिक दंड में बाँधने और ढीला करने का अद्वितीय अधिकार दिया। हालाँकि, एक बार जब साथी मर गया, तो वह अधिकार भी उनके साथ मर गया।

प्रेरितों ने अनुमति देने और मना करने के लिए विधायी रूप से इस अधिकार का प्रयोग किया। और हम प्रेरितों ५ में पतरस को न्यायिक अधिकार का प्रयोग करते हुए देख सकते हैं जहाँ पतरस ने हनन्याह और सफीरा को सज़ा के लिए बाध्य किया क्योंकि उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला था। परिणामस्वरूप, पतरस ने अपने प्रेरितिक अधिकार का उपयोग करके उन्हें सज़ा के लिए बाध्य किया और वे मारे गए।

आज बहुत से लोग बांधने और खोने की इस अवधारणा को संदर्भ से बाहर ले जाते हैं और राक्षसों को बांधने और खोने की बात करते हैं। सबसे पहले हमें शैतान का विरोध करने के लिए कहा गया है, उसे बांधने के लिए नहीं और वह आपके पास से भाग जाएगा (याकूब ४:७)। शास्त्रों में ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि हमें आत्माओं के विनाशक को

Fx – इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा मत्ती १६:१३-२०;
मरकुस ८:२७-३०; लूका ९:१८-२१ | 11

बाँधना चाहिए। यहाँ तक कि माइकल को भी शैतान के साथ आध्यात्मिक युद्ध में शामिल न होने के लिए कहा गया था। यहूदा हमें याद दिलाता है: लेकिन प्रधान स्वर्गदूत माइकल भी, जब वह मूसा के शरीर के बारे में शैतान के साथ विवाद कर रहा था, तो उसने उसके खिलाफ निंदात्मक आरोप लगाने की हिम्मत नहीं की, बल्कि कहा, “प्रभु तुम्हें डाँटता है” (यहूदा ९)! सैद्धांतिक रूप से, भले ही हम प्रतिद्वंद्वी को बांध सकें, लेकिन ऐसा लगता है कि बंधन में बंधने के बाद भी कोई न कोई उसे ढीला करता रहता है! नहीं, यहां संदर्भ शैतानी गतिविधि नहीं, बल्कि प्रेरितिक अधिकार है।

बाद में पत्रियों में, हम प्रेरितों को बंधन में बंधते और छूटते हुए पाते हैं। सबसे पहले, हम देखते हैं कि पतरस ने बंधन का अभ्यास किया जब उसने अनान्यास और सफीरा को उस धन का कुछ हिस्सा रखने के बारे में झूठ बोलने से मना किया जो कि यरूशलेम में कलीसिया में जरूरतमंदों को दिया जाना था जब उन्होंने संपत्ति का एक टुकड़ा बेचा था। जब केफ़ा ने उनका सामना किया, तो वे पवित्र आत्मा से झूठ बोलने के कारण व्यक्तिगत रूप से मृत होकर गिर पड़े (प्रेरितों ५:१-११)। मृतकों को जीवित करने की तरह, मैंने आज कलीसिया में किसी को भी ऐसा करते नहीं देखा। दूसरे, पॉल ने कलीसिया में विश्वासियों पर हमला करने से यहूदीवादियों का सामना किया, या उन्हें मना किया (गलातियों १:१ से २:२१); और पॉल और बरनबास ने यरूशलेम में परिषद में विश्वासियों पर अनिवार्य होने के रूप में टोरा में सभी ६१३ आज्ञाओं को लागू करने से यहूदियों के एक समूह का सामना किया, या उसे मना किया (प्रेरितों १५:१-२१)।

एक बार जब महान महासभा ने मसीह को अस्वीकार कर दिया, तो उनका मंत्रालय नाटकीय रूप से बदल गया (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। दूसरे परिवर्तन का संबंध उन लोगों से था जिनके लिए उसने अपने मसीहापन को सत्यापित करने के लिए चमत्कार किए थे। अपनी अस्वीकृति से पहले, यीशु ने लोगों के लाभ के लिए चमत्कार किए और विश्वास का प्रदर्शन नहीं मांगा; लेकिन बाद में, उन्होंने केवल व्यक्तिगत आवश्यकता और विश्वास के प्रदर्शन के आधार पर चमत्कार किए। इसलिए जोर आस्थाहीन भीड़ से हटकर आस्था वाले व्यक्तियों पर केंद्रित हो गया। इसलिए, यीशु ने अपने बारह प्रेरितों को चेतावनी दी कि वे [जनता को] यह न बताएं कि वह मसीहा थे (मत्तीयाहु १६:२०; मरकुस ८:३०बी)।

पतरस की स्वीकारोक्ति दर्शाती है कि इज़राइल के पास मसीहा के संबंध में आंशिक दृष्टि है, लेकिन उनमें आंशिक अंधापन भी है, जैसा कि हम अगली फ़ाइल में देखेंगे।